International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 7.150, Volume 06, No. 03(I), July - September, 2024, pp. 174-182

अंत्योदय में समाज की भूमिका

डॉ. चेतन सिंह गुलेरिया*

सार

भारतीय समाज में समाज के सहयोग के बिना कोई बदलाव नही होता था भारत की प्राचीन संस्कृत्ति और परम्पराएँ बहुत सुदृढ़ रही है, गाँव कभी भी गुलाम नही हुए सभी एक दुसरे के पूरक रहे है गांवों के लोग आपसी श्रम करके रास्ते, सार्वजनिक स्थलों को साफ करना और किसी जरूरतमंद की मदद करना ये सब सामूहिक होता रहा है। पहले बढई, नाई ,लोहार, सुनार, धोबी ये सभी समाज के महत्पूर्ण अंग रहे है, और सभी स्वाभिमान से काम करते थे यह रोजगार भी होता था और जीवन में मान–सम्मान भी था। परन्तु 1857 की लड़ाई में 1830 से 1857 के बीच में छोटे–छोटे राजाओं की सेनाएं होती थी, अंग्रेजो ने वो सेनाएं समाप्त की, जिससे ये सभी सैनिक बेकार हो गये और बेरोजगार भी हो गये और अंग्रेजी सरकार ने ऐसी संस्कृति को तैयार किया कि जो भी कार्य समाज में होगा वो सरकार ही करेगी और जिस कारण समाज की मानसिकता भी धीरे–धीरे प्रभावित हुई और सरकार के ऊपर हर काम के लिए निर्भरता होनी लगी। जिसके कारण भारतीय समाज में बड़ा परिवर्तन हुआ सरकार कोई भी रही हो समाज में सभी लोगों को मदद नही कर पाई हर व्यक्ति तक भी सरकार नही पहुँच पाई और समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग छुट गया वो हाशिये में आ गया जो आज भी अंतिम पायदान में सरकार की मदद का इंतज़ार कर रहा है। धीरे–धीरे लोक हितेषी व्यक्तियों ने व धार्मिक संस्थायों और राज्यों ने भी समाज के अंतिम व्यक्ति के कल्याण के लिए सामाजिक सहयोग से कार्य करना शुरू किया।

शब्दकोशः *सर्वोदय, पिछड़ापन, सहानुभूति, आत्मीयता, स्वाभिमानपूर्वक।*

प्रस्तावना

पीड़ितों की मदद करना प्राचीनकाल से भारतीय समाज की परम्परा रही है मजुमदार के अनुसार राजा, व्यापारी, जमीदार तथा अन्य सहायता संगठन धर्म के पवित्र कार्य को संम्पन करने के लिए एक दुसरे की मदद करने में आगे बढ़ने का प्रयत्न करते थे। हड़प्पा संस्कृति से लेकर बौद्धकाल तक जनता भलाई के लिए सन्देश दिए जाते थे, मौर्यकाल में भी जनता की भलाई के लिए उपदेश दिए गये। और अशोक ने भी कहा कि सहायता के लिए मुझे मेरी प्रजा कभी भी मिल सकती है चाहे मैं अनतपुर में ही क्यों न रहूँ , गुप्तकाल एवं हर्ष काल में भी इसी प्रकार की व्यस्था देखने को मिलती है। भारत में जब मुस्लिम आये तो उन्होंने भी अपने धर्म के आदेशनुसार दान–पुन्य पर धन व्यय किया। जकात के तहत भी प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिवर्ष अपनी सम्पति का ढाई प्रतिशत भाग जकात के रूप में व्यय करना आवशक है ये रकम अभावग्रस्त लोगों की सहयता के लिए दी जाती है। भारतवर्ष में काफी समय से पारसी लोग भी रहते है पारसियों ने धर्मशालायें, तालाब, कुएं, विद्यालय आदि बनाये। और जब अंग्रेज भारत आये तो क्रिशचिन मिशनों ने अपने धर्म के प्रचार के सम्बधं में विभिन्न प्रकार के समाज कल्याण के

* शोधार्थी, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला, दीनदयाल उपाध्याय अध्ययन केंद्र, धर्मशाला, काँगड़ा, हिमाचल प्रदेश।

लिए कार्य किये। इस मिशन ने कई प्रकार की समाज कल्याण की संस्थाएं स्थापित की जिनके द्वारा अभावग्रस्त एवं पीड़ितों की सहायता की जाती थी, उस समय अधिकतर कल्याणकारी संस्थाएं इन मिशनों द्वारा स्थापित की जाती थी। इसमें राजा राम मोहन राय ऐसे पहले भारतीय थे जिन्होंने समाज में ऐसी कार्य को गति प्रदान की जिसमे कई सामाजिक बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया गया सती प्रथा के विरोध में भी उन्होंने कई लेख लिखे जिसके कारण बाद में सती प्रथा को अवैध घोषित किया गया। इसके बाद केशव चन्द्र सेन ऐसे समाज सुधारक थे जिन्होंने स्त्री शिक्षा पर बहुत बल दिया। ईश्वर चद्र विद्यासागर एक और समाज सुधारक थे जिनके प्रयासों से विधवा पुनः विवाह के लिए एक समिति की स्थापना हुई। इसी क्रम में आगे दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना 1875 की। इसका मुख्य उद्देश्य बाल विवाह, स्त्री शिक्षा और इनका कहना था कि 'वेदों की और लौटो'। इसके बाद स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना 1897 में की इसने भी बहुत सारी सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए कार्य किया। इसके बाद गाँधी ने भी सर्वोदय की अवधारणा का प्रतिपादन किया। उन्होंने देश में राम राज्य की स्थापना की कल्पना की और एक ऐसे समाज की कल्पना की जिसमे व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास के लिए उचित दशाएं उपलब्ध हो। वंचित वर्ग के उत्थान की दृष्टी हमारे समाज में हमेशा रही है। त्रेता युग में जब राम द्वारा सीता स्वयंवर में धनुष भंग करने के पश्चात् राम–सीता विवाह की जानकारी माता कौशल्या को मिली, उन्होंने सुमंत को बुलाकर आदेश दिया कि पूरी अयोध्या में धन–धान्य वितरित किया जाये और राज्य में एक भी व्यक्ति अभावग्रस्त न रहे। उन्होंने कहा कि जिस राजा के राज्य में एक भी व्यक्ति भूखा है उसे उत्सव मानाने का अधिकार नही है। समाज के अभावग्रस्त लोगों के उत्थान का जिक्र महर्षि वेद व्यास द्वारा रचित 'रामायण' और चाणक्य के 'अर्थशास्त्र' में भी मिलता है। समाज के इसी वर्ग हेतु स्वामी विवेकानंद ने दरिद्रनारायण शब्द का प्रयोग किया। विनोवा भावे और महात्मा गाँधी ने इसके लिए "सर्वोदय" शब्द का प्रयोग किया वैसे सर्वोदय में अन्तोदय निहित है, अन्तोदय कहे या सर्वोदय, इतना तो स्पष्ट है कि जिस देश के आर्थिक चिंतन में अंतिम पंक्ति के व्यक्ति का उदय न हो, वह देश न केवल आर्थिक दृष्टी से, बल्कि सामाजिक सृष्टी से भी भटक जाता है। अन्तोदय के लिए जरुरी है गरीबी उन्मूलन, दादाभाई नौराजी ने गरीबी के सम्बन्ध में सबसे पहले 1878 में 'द पावर्टी ऑफ़ इंडिया' नाम की एक पुस्तक लिखी थी। सामाजिक पिछड़ापन स्वामी विवेकानंद के लिए एक गंभीर चिंता का विषय था अपने दो वर्षो के भारत भ्रमण में उन्होंने लोगों की गरीबी और पिछड़ापन तथा झोंपड़ियों में लाचारी का अँधेरा देखा। उस भ्रमण के पश्चात् ही समुद्र के बीच में एक चट्टान के बीच खड़े होकर उन्होंने घोषणा की थी कि "हे प्रभु ! मुझे मोक्ष नही चाहिए. जब तक भारत का प्रत्येक व्यक्ति भरपेट भोजन नही कर लेता, तब तक मैं बार–बार जन्म लूँ और भारत माता की सेवा करता रहूँ।" महात्मा गाँधी ने पश्चिमी विचारक जॉन रस्किन की पुस्तक 'अन टू दा लास्ट' पढने के बाद कहा था कि "अब मैं वह नही रह गया हूँ जो इस पुस्तक पढने से पहले था।" उसी पुस्तक के शीर्षक का गाँधी जी ने अनुवाद 'अन्तोदय' किया। उन्होंने कहा कि समाज में जो व्यक्ति सबसे पीछे रह गया है, उसकी चिंता सबसे पहले की जानी चाहिए। अन्तोदय की इस भावना को उन्होंने बाद में 'सर्वोदय' के रूप में परिभाषित किया। अभावर्ग्रस्त वर्ग के उत्थान हेतु उन्होंने शब्द दिया 'अंत्योदय' यानि समाज के अंतिम व्यक्ति का उदय। इस शब्द में संवेदना है, सहानुभूति है, प्रेरणा है, साधना है, प्रामाणिकता है, आत्मीयता है, कर्तव्यपरायणता है और लक्ष्य की स्पष्टता है। दीनदयाल जी अश्रुपूरित आंखों से आंसू पोंछने और मुरझाए चेहरों पर मुस्कराहट लौटाने को 'अंत्योदय' की पहली सीढ़ी मानते थे।

अंत्योदय में समाज की मौन क्रांति

गांधीजी और दीनदयाल जी के 'रचनात्मक कार्यक्रम' में शामिल विषय जितने प्रासंगिक उस समय थे उतने ही आज भी हैं। हालांकि उन समस्याओं के निराकरण हेतु 1920 से ही प्रयास जारी हैं, परन्तु 1948 में गांधीजी की हत्या के बाद उन प्रयासों का असर धीरे–धीरे कम होता गया। दीनदयाल का अन्तोदय दर्शन भी कुछ प्रदेश सरकारों ने समाज तक पहुँचाने का प्रयास किया है। किन्तु सरकारी योजनाओं के कम असरकारी होने का प्रमुख कारण यह रहा कि देश में तत्कालीन शासकों की मेहरबानी से ऐसा जन मानस बनता गया, जिसमें इस सोच को बढ़ावा मिला कि जो भी काम करना है सरकार करेगी। इस मानसिकता के कारण सरकार पर निर्भरता बढ़ती गयी जो आज एक बहुत बड़ी समस्या बन गयी है।

दीनदयाल जी और गांधीजी इस सोच के सख्त विरुद्ध थे। वे समाज के माध्यम से ही समाज में परिवर्तन चाहते थे। ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबों को सरकारी योजनाओं का लाभ कम मिला लेकिन फिर भी समाज के ग्रामीण लोग अपने स्तर पर समाज के हित में लगातार अपनी भूमिका निभाते रहे। दीनदयाल उपाध्याय भी सामाजिक परिवर्तन में समाज की सक्रिय भूमिका चाहते थे। दीनदयाल जी के अनन्य सहयोगी रहे और उनके चिंतन को चित्रकूट एवं गोण्डा के 500 से अधिक ग्रामों में मूर्त रूप प्रदान करने वाले नानाजी देशमुख कहते हैं, ''बातें करने से समाज की समस्याओं का और पीड़ितों की पीड़ा दूर नहीं हो सकती। यह तो करने से ही होगा। एकदम परिवर्तन नहीं होगा, लेकिन यदि किसी ने ठान लिया तो कोई कठिन नहीं है। सकारात्मक मार्ग ढूंढ़ना दीनदयाल जी का स्वभाव था। हर काम सरकार से संभव नहीं है। लेकिन जो लोग सरकार में हैं क्या उनके मन में रचनात्मक भाव है। भारत में सरकार भी चलाना है तो उसे चलाने का भाव सदैव रचनात्मक होना चाहिए। रचनात्मक सरकार होगी तो समाज भी ऐसी सरकार के अनेक रचनात्मक कार्यों में स्वतः रुचि लेगा। रचनात्मक कार्य और प्रत्येक नागरिक की सृजनशीलता का उपयोग किये बगैर राष्ट्रदेवता को हम प्रसन्न नहीं कर सकते'' (झा, 2018, पृष्ठ 129)।

गत बीस–पच्चीस वर्षों की बात करें तो गांधी, दीनदयाल और नानाजी जैसे महापुरुषों की प्रेरणा से समाज में अनेक व्यक्तियों एवं संस्थाओं ने अपने–अपने स्तर पर अंत्योदय के लिए ठोस प्रयास किये हैं। बिना किसी सरकारी सहयोग के वे दूरदराज के क्षेत्रों में आज भी अपना काम कर रहे हैं, परन्तु राष्ट्रीय स्तर पर न तो देशवासी इन्हें जानते हैं और न ही इनके माध्यम से असंख्य लोगों के जीवन में आए सार्थक बदलाव को। कुछ लोग बिना कोई ठोस काम किये ही देश–दुनिया से पुरस्कार और प्रसिद्धि बटोर लेते हैं, परन्तु परिवर्तन के इन पुरोधाओं की न तो जनसंचार माध्यम सुध लेते हैं और न ही सरकारें। किन्तु इनके प्रयासों से बदलाव का जो चित्र दिखायी दे रहा है उसे नकारा नहीं जा सकता। कुछ लोगों ने तो समाज की सिर्फ एक समस्या को पकड़कर उसके निराकरण हेतु अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया है।

हरिद्वार में आशीष गौतम ने हजारों कुष्ठ रोगियों का पुनर्वास किया है। पोलियो की भांति भले ही कुष्ठ रोग का भी 2005 में भारत से उन्मूलन हो चुका हो, किन्तु यह बीमारी आज भी हर किसी को डराती है। कारण, बीमारी का इलाज भले ही शरीर से उन्मूलन हो गया हो, परन्तु यह आज भी अधिसंख्य लोगों के दिमाग में बसी हुई है, यही कारण है कुष्ठ रोगियों को सामान्य बस्तियों में नही रहने दिया जाता। जिस कारण उन्ही सड़क के किनारे अथवा किसी सुनसान जगह पर खुले आसमान के नीचे अमानवीय जीवन जीना पड़ता है। देश भर में 700 से अधिक कुष्ठ रोगियों की बस्तियां इसका प्रमाण है। ऐसी स्थिति में हरिदार स्थित 'दिव्य प्रेम सेवा मिशन' एक ऐसा स्थान है जहाँ कुष्ठ रोगियों की भेदभाव रहित सेवा की जाती है और उन्हें एक स्वाबलंबी जीवन जीने के लायक बनाया जाता है। आशीष गौतम जी कहते ही कि यह कुष्ठ रोगी के रूप में ईश्वर की सेवा है, 'कुष्ठ रोगियों के लिए यह गौरव की बात नही है कि हम उनकी सेवा कर रहे है, बल्कि यह हमारे लिए सम्मान की बात है कि उन्होंने हमे अपनी सेवा करने का अवसर दिया मैं उन सब में भगवान् के दर्शन करता हूँ, और भगवान की सेवा मानकर ही उनकी सेवा करता हूँ।

आज हमारे देश में करीब पांच लाख लोग प्रतिवर्ष समय पर अंग प्रत्यारोपण न हो पाने के कारण काल का ग्रास बन जाते है। इसके विपरीत देश में प्रतिवर्ष 1.5 लाख लोग सड़क दुर्घटनाओं में मारे जाते है, यदि हम लोगों को अंगदान के लिए प्रेरित करेगें तो संभवतः एक भी भारतीय नागरिक की समय पर अंगदान के आभाव में मृत्यु नही होगी। अंगदान के क्षेत्र में एक मौन क्रांति का श्रीगणेश करते हुए दिल्ली की दधिचि देह दान समिति ने 1997 से लेकर अब तक 275 से अधिक मृत मानव शरीर और एक हजार से अधिक आंखें दिल्ली के विभिन्न मेडिकल कालेजों को दान करायी हैं। अभी तक 10,000 से अधिक लोग समिति के माध्यम से मृत्यु के उपरांत देह दान एवं अंगदान का संकल्प ले चुके हैं। इस समिति से जुड़े हुए सभी सदस्य अपने पुरे शरीर का अपने को केवल मात्र ट्रस्टी मानते है।

महाराष्ट्र के जनजाति बहुल धुले जिले के एक युवक हर्षल विभांडिक ने गत दो वर्षों में अपने जिले के सभी 1103 सरकारी स्कूलों का बिना सरकारी सहयोग के डिजिटलीकरण कर दिया। यह प्रयास इसलिए भी प्रशंसनीय है क्योंकि इसमें 70 प्रतिशत सहयोग राशि वहां के ग्रामवासियों, स्कूली विद्यार्थियों और शिक्षकों ने दी है। इस प्रयोग के परिणामस्वरूप अकेले वर्ष 2017 में ही 2000 से अधिक विद्यार्थियों ने विभिन्न पब्लिक स्कूलों को छोड़कर सरकारी स्कूलों में प्रवेश लिया है। 1078 स्कूलों का डिजिटलीकरण करने के बाद जो 25 स्कूल बच गये वे वास्तव जिले में चल रहे उर्दू स्कूल थे, उसका डिजिटलीकरण इसीलिए नही हो पाया, क्यूंकि किसी के पास उर्दू में डिजिटल सामग्री नही थी, इसीलिए हर्षल और रामभाऊ म्हालगी प्रबोधनी ने मिलकर एक कम्पनी से उर्दू के शिक्षकों की मदद से उर्दू में सामग्री तैयार कराई, और 23 जुलाई 2016 को प्रथम उर्दू डिजिटल स्कूल का उद्घाटन किया। अब पुरे जिले में वहां यह सुविधा उपलब्ध है।

जब कोई संकट आता है तो अधिकतर गृहिणियां आंसू बहाना शुरू कर देती है महाराष्ट्र के सोलापुर की चन्द्रिका चैहान ऐसी महिलाओं के लिए एक प्रेरणा है जिन्होंने अपने परिवार का ही संकट नही उबारा, बल्कि स्वयं सिलाई के काम से शुरुआत करके संकट में फंसी अपने शहर की 15,000 महिलाओं को स्वाभिमानपूर्वक जीवन जीने लायक बनाया, जिनमें 400 प्रथम पीढ़ी की उद्यमी बन गयी हैं। श्रीमती चौहान का प्रथम उद्देश्य है महिला में आत्मविश्वास का जागरण और उसकी प्रतिभा को जाग्रत करते हुए उसे परिवार के साथ–साथ अपने सामाजिक उतरदायित्व को प्रभावी ढंग से निभाने के योग्य बनाना है।

कभी अमीरों और रसूखदारों का खेल मने जाने वाले निशानेबाजी को पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बागपत जिले में स्थित जौहड़ी गांव में डा. राजपाल सिंह ने आम आदमी का खेल बना दिया उन्होंने लाठी, गन्ने, ईट के टुकड़ों, पानी से भरे जग, खेत में काम आने वाले उपकरणों आदि से अभ्यास कराकर 2500 से अधिक निशानेबाज बिना संसाधनों के 42 अन्तर्राष्ट्रीय, 300 राष्ट्रीय और 2000 से अधिक राज्य स्तर के निशानेबाज तैयार कर पूरी दुनिया में एक मिसाल कायम कर दी। आश्चर्य नही होगा यदि आने वाले ओलम्पिक विजेता इसी शूटिंग रेंज से निकले, यहाँ से चार खिलाडियों का चयन टोक्यो ओलम्पिक के लिए हुआ है। डॉ. राजपाल सिंह जी अब वीआईपी लोगों को कोचिंग देने के बजाय वे गाँव से एकलव्य खोजकर उन्हें निश्नेबाज बना रहे है।

इसी प्रकार दिल्ली के व्यवसायी श्रवण गोयल ने गांवों से शहरों में आकर नौकरी अथवा व्यवसाय करने वाले लोगों को वापस अपने–अपने गांव के विकास में सहभागी बनने के लिए जो प्रयास शुरू किया वह अब एक जनांदोलन बनने की ओर अग्रसर है। संसाधनों के अभाव में भी ये लोग अपने–अपने स्थान पर डटे हुए हैं। यदि उनके काम से प्रेरित होकर कुछ लोग भी अपने–अपने स्थान पर परिवर्तन के कुछ ठोस प्रयास प्रारंभ करते हैं तो कुछ ही समय में देश एक बड़े बदलाव को महसूस करने लगेगा। कुछ प्रयासों का तो अद्भुत असर हुआ है। कुछ स्थानों पर आज सेवित ही अपने आसपास के दूसरे जरूरतमंद लोगों की सेवा कर उन्हें स्वावलंबी बनाने का प्रयास कर रहे हैं। कुछ स्थानों पर मानसिकता में जो बदलाव दिखायी दिया वह आंखें खोल देने वाला है। महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के ढगेवाडी गांव में कुछ साल पहले गांव के वनवासियों ने यह कहकर अपने गरीबी रेखा वाले राशनकार्ड प्रशासन को लौटा दिये कि अब उनके जीवनस्तर में संतोषजनक सुधार आ गया है इसलिए अब उन्हें उनकी जरूरत नहीं है। जब देश के अनेक हिस्सों में झूठ बोलकर बीपीएल राशन कार्ड बनवाने की होड़ लगी हो उस समय मानसिकता में आया यह बदलाव बहुत कुछ कहता है। इसी प्रकार सरकारी एजेंसियों की प्रतीक्षा करने की बजाए महाराष्ट्र के धुले जिले के जनजाति गांव बारीपाड़ा में ग्रामवासियों ने अपने संसाधनों एवं श्रम से परिवर्तन का ऐसा प्रयोग किया है, जिसे देखने के लिए आज दूसरे ग्रामवासी ही नहीं, बल्कि सरकारी अधिकारी और दुनियाभर से विशेषज्ञ भी आते हैं। इन समाज–शिल्पियों ने अपने प्रयासों से सिद्ध कर दिखाया है कि सरकारी संस्थाओं की प्रतीक्षा करने की बजाए यदि समाज स्वयं अपने स्तर पर पहल करता है तो गंदगी, गरीबी, अशिक्षा, कुपोषण, छुआछूत जैसी समस्याएं लंबे समय तक हमारा मार्ग नहीं रोक सकती।

इसी को निमित रखते हुए ऐसे गुमनाम समाजशिल्पी जो बिना किसी स्वार्थ के अपना पूरा जीवन समाज के अंतिम तबके कमजोर तथा जिनकी ओर किसी का ध्यान नही जाता ऐसे संस्थान जिन्होंने अपना जीवन लगाने के साथ–साथ पुरे समाज को भी इस काम के लिए प्रेरित किया है।

अंत्योदय में सामाजिक संस्थाओं की भूमिका

गत बीस–पच्चीस वर्षों की बात करें तो गांधी, दीनदयाल और नानाजी जैसे महापुरुषों की प्रेरणा से समाज में अनेक व्यक्तियों एवं संस्थाओं ने अपने–अपने स्तर पर अंत्योदय के लिए ठोस प्रयास किये हैं। प्रसिद्धिपरांगमुख भाव एवं बिना किसी सरकारी सहयोग के वे दूरदराज के क्षेत्रों में आज भी अपना काम कर रहे हैं, परन्तु राष्ट्रीय स्तर पर न तो देशवासी इन्हें जानते हैं और न ही इनके माध्यम से असंख्य लोगों के जीवन में आए सार्थक बदलाव को। कुछ लोग बिना कोई ठोस काम किये ही देश–दुनिया से पुरस्कार और प्रसिद्धि बटोर लेते हैं, परन्तु परिवर्तन के इन पुरोधाओं की न तो जनसंचार माध्यम सुध लेते हैं और न ही सरकारें। किन्तु इनके प्रयासों से बदलाव का जो चित्र दिखायी दे रहा है उसे नकारा नहीं जा सकता। कुछ लोगों ने तो समाज की सिर्फ एक समस्या को पकड़कर उसके निराकरण हेतु अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया है। महाराष्ट्र में गिरीश प्रभुणे ने राज्य की उन घुमंतु जनजातियों के एक लाख से अधिक लोगों के जीवन को स्थायित्व प्रदान कर उन्हें सरकारी योजनाओं का लाभ दिलवाया है, जिन्हें सरकारी रिकार्ड में पिछले कुछ समय तक 'जन्मजात अपराधी' माना जाता था। लातूर के संजय कांबले ने अपने शहर के कचरा बीनने वाले 800 से अधिक लोगों को स्वाभिमानपूर्वक जीवन जीने योग्य बनाया है। महाराष्ट्र के ही अहमदनगर जिले में डा. गिरीश कुलकर्णी ने वेश्यावृत्ति में फंसी 900 से अधिक महिलाओं को न केवल बदनाम मोहल्ले से निकालकर स्वाभिमानयुक्त जीवन जीने लायक बनाया है, बल्कि उनकी दूसरी पीढ़ी को इस धंधे में फंसने से बचा लिया। राजस्थान के भरतपुर में डॉ. बी.एम. भारद्वाज ने सड़कों के किनारे व गंदगी के ढ़ेर पर जिंदगी गुजारने वाले 23,000 से अधिक निराश्रित मानसिक रोगियों को स्वस्थ करके उनके बिछुड़े परिवारों से मिलवाया है। अभी भी वे अपने 54 आश्रमों के माध्यम से 9700 से अधिक ऐसे लोगों की देखभाल कर रहे हैं। बंगलौर की 'सोकेयर' संस्था ने गत 18 सालों में 300 से अधिक कैदियों के बच्चों को अपराधी बनने से बचाया है। उज्जैन के अनिल डागर ने पिछले 24 साल में 24,000 से अधिक लावारिश लाशों का अंतिम संस्कार किया है। दिल्ली का सफाई कर्मचारी आन्दोलन पिछले 30 सालों से हाथ से मानव मल साफ करने की कुप्रथा के विरुद्ध संघर्ष कर रहा है। (कुमार, 2019)

दीनदयाल जी एक बार धर्मराज युधिष्ठिर के बारे में कहा है कि उन्होंने अपना ही नही, दूसरों का भी विचार किया, जब यक्ष ने उनके सभी भाईयों में से किसी एक को पुनजीवित करने के लिए वरदान मांगने को कहा तो उस समय धर्मराज ने नकुल व सहदेव में से किसी एक को जीवित करने के लिए कहा, तब यक्ष ने आश्चर्य से कहा कि आपके पास महाबलशाली भीम और धनुर्धर अर्जुन है, ऐसे में नकुल या सहदेव को जीवित करने का क्या अर्थ है, तब धर्मराज ने कहा हमारी दो माताएं है कुंती और माद्री, सौभाग्य से मैं कुंती का एक पुत्र मैं जीवित हूँ, माद्री का भी एक पुत्र जीवित रहे इसलिए तुम नकुल या सहदेव में से किसी एक को जीवित कर दो, उन्होंने यहाँ पर यह विचार नही किया कि अर्जुन धनुर्धारी है, भीम बलशाली योधा है, परन्तु उन्होंने केवल धर्म व समाज का विचार किया यक्ष ने उनके चारों भाईयों को पुनःजीवित कर दिया। (दीनदयाल उपध्याय सम्पूर्ण वांग्मय खंड–८ पृष्ठ–२२६)

दीनदयाल जी कहते है कि मनुष्य जो भी कर्म करता हो वो सब समाज के लिए है, श्रम से मूल्य का निर्धारण नही होता अपितु योग्यता के आधार होता है, दुनिया की दृष्टी में मूल्य बदलता रहता है, परन्तु वास्तव में श्रम के मूल्य चुकाने की कोई सीमा नही है, अध्यापक जो शिक्षा देता है, उसका मूल्य रूपए में नही चुकाया जा सकता किसी डॉक्टर ने आपको मृत्यु से बचा लिया हो तो उसका आप क्या मूल्य लगा सकते हो, इस प्रकार मनुष्य का काम और उसके बदले उसे जो मिलता है, उसका कोई मेल नही कर्म का मूल्य चुकाना असम्भव है। इसीलिये हमारे यहाँ पहले सब काम सेवा कार्य के नाते ही किये जाते है रूपए–पैसे में इनका कोई मूल्य नही लगाया जा सकता था। सेवा करना हो हमारा धर्म है, शेष सब चिंता समष्टि पर डाल देनी चाहिए। (दीनदयाल

उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय खंड–११ पृष्ठ–२००) दीनदयाल जी पूर्ण रोजगार के हिमायती थे, वे कहते थे कि प्रत्येक समर्थ और स्वस्थ व्यक्ति को जीविकोपार्जन की व्यवस्था करना आर्थिक नियोजन व औद्यौगिक निति का लक्ष्य होना चाहिए, बेकारी को दूर करने के लिए रोजगार के नये अवसरों के निर्माण के साथ अर्ध–रोजगार वालों की उत्पादकता और आय बढ़ाने की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए, बढ़ी हुई क्रयशक्ति से वे दूसरों को काम दे सकेगें, काम ना मिलने की अवस्था में जीवनयापन के लिए बेकारी भते की व्यवस्था होनी चाहिए। (दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय खंड–११ पृष्ठ–२६०)

दीनदयाल जी आर्थिक उन्नत्ति के बारे में बात करते हुए कहते है कि यह सुनिश्चित करना भी आवश्यक है कि विकास योजनाओं द्वारा उत्पन्न धन किसी विशेष वर्ग के हाथों में न पहुँच जाये, अपितु वंचित वर्ग तक भी हमेशा पहुँचता रहे, यह तभी संभव है, जब आर्थिक विकास के साथ नैतिक व चारित्रिक विकास भी होता रहे, तभी समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचने का हमारा स्वप्न साकार होगा। (दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय खंड–१२)

दीनदयाल जी आर्थिक नीतियों की सफलता और आर्थिक प्रगति का आकलन कुलीन या उच्च तबके से नही बल्कि उनसे होगा, जो समाज की सबसे निचली सीड़ी पर है, इस देश में करोड़ों ऐसे लोग है, जो अभी भी अपने मुलभुत अधिकारों से वंचित है, सरकार की नीतियों और योजनाओं के निर्धारण में इन करोंड़ों लोगों को कोई स्थान नही मिलता और न ही प्रशासन की ऐसी कोई मंशा या इच्छा दिखाई देती है, परन्तु इन्हें प्रगति के पथ पर रोड़ा समझा जाता है, तथापि हमारे लिए ये दीन–हीन और निरक्षर ईश्वर का स्वरूप है और पूजनीय है इनकी उपासना हमारा धर्म है। और देश तब तक उर्जा और स्फूर्ति के साथ आगे नही बढ़ सकता, जब तक की हम सुदूर गाँव–देहात और खेत और खलिहान तक आशा विश्वास का सन्देश पहुँचाने में सफल न हों जाएँ, उन स्थानों पर जहाँ समय अभी भी वहीं रुका हुआ है। जहाँ माता पिता अपनी संतानों को उनके भविष्य को कोई दिशा देने में असमर्थ है। हमारे विश्वास हमारी प्रार्थना और समर्पण का उद्देश्य और हमारी सफलता और उपलब्धियों के आकलन केंद्र में वह होना चाहिए। (दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय खंड–१२पृष्ठ–२६०)

दीनदयाल जी कहते है कि जब तक एक–एक व्यक्ति की विशिष्टता व विविधता को ध्यान में रखकर उसके विकास की चिंता नही करेंगे, तब तक मानवता की सच्ची सेवा नही होगी, इसके लिए विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था चाहिए, स्वयंसेवी क्षेत्र को खड़ा करना होगा, यह क्षेत्र जितना खड़ा होगा, उतना ही मनुष्य आगे बढ़ सकेगा, मनुष्यता का विकास हो सकेगा, एक मनुष्य दुसरे का विचार कर सकेगा, हर की व्यक्तिगत आवश्कताओं व विशेषताओं का विचार करके उसे काम देने पर उसके गुणों का विकास हो सकता है, यह विकेन्द्रित व्यस्था भारत ही संसार को दे सकता है, हम नये सिरे से आर्थिक निर्माण शुरू कर सकते है। (दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय खंड–७ पृष्ठ–४३)

दीनदयाल जी कहते है कि जब स्वामी विवेकानंद से पश्चिम जगत को लोगों ने पूछा की स्वामीजी आपका देश तो विचारों की दृष्टी से और अध्यात्मिकता के ज्ञान से अंत्यंत प्रगति प्राप्त किये हुए है, परन्तु फिर उस देश में इतनी गरीबी क्यों है, वह इतना पिछड़ा और गुलाम क्यों है? स्वामी जी इस प्रशन का कोई संतोषजनक जवाब नही दे सके, स्वामी जी ने प्रशन पर बार–बार विचार किया और फिर विचार करने के पश्चात उनको यह स्पष्ट लगा कि हमारा देश इतने उच्च गुणों के होते हुए भी पिछड़ा हुआ इसलिए है कि उसके पास सामर्थ्य नही है, शक्ति नही है, इसीलिए उन्होंने सबसे पहले सामर्थ्य उत्पन करने का विचार किया, कि जब तक हम हिन्दुस्थान को सामर्थ्यवान नही बनाते, भौतिक दृष्टी से सबल नही होते, तब तक हम संसार को इस आधार पर खड़ा नही कर सकते, अपने उन उच्च आदर्शों की कीमत तभी होगी, जब हमे वह सामर्थ्य प्राप्त होगा, जिससे हम खड़े होकर ऊँचे स्वर में कह सकेंगे कि हमारे पास जीवनयापन के ऐसे उच्च आदर्श व मूल्य है। इसलिए समाज के अंतिम व्यक्ति को जगाकर उसे आत्म स्वाभिमानी बनाना होगा, तभी हम संसार की सेवा कर पाएंगे। (दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय खंड–७ पृष्ठ–१२७)

दीनदयाल जी समाज के सुख की बात करते हुए कहते है कि एक बार में गाड़ी में बैठा हुआ था, भोजन कर रहा था। भोजन करते–करते क्या हुआ– एक कंकाल– सा आदमी आया सामने से भीख मांगने वाला,और वह

अपना ऐसा वेश बनाकर बिलकुल सामने आकर खड़ा हो गया हो और मांगने लगा, मैं भोजन कर रहा था, मेरे पास सब चीज थी किन्तु वह जिस वेश में आकर खड़ा था, भूखा आकर खड़ा है, मैं कैसे खाता रहता? नतीजा यह हुआ की सबकुछ होने के बाद भी मन को सुख नही था, उसमे से रोटी निकाल कर उसके दी नही, तब तक मन को संतोष नही हुआ। वह भी शायद इसीलिए आया था कि चलो हम चलो ये देंगे, इस तरह यदि दूसरा दुखी है, हम अपने को सोच ले की हम सुखी है तो सुखी नही होते। मन का सुख सबके साथ जुड़ा हुआ है, इसी प्रकार पुरे समाज के साथ यह सुख और दुःख का रिश्ता जुड़ा हुआ है, पूरा समाज जब तक सुखी नही होगा तब तक हम भी सुखी नही हो सकते। (दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांगमय खंड–14 पृष्ठ–158)

दीनदयाल जी कहते है कि आज विश्व में समष्टि के जिस एक रूप की सर्वोपरी महता है, वह 'राष्ट्र' ही है। सम्पुर्ण मानव जाति की भलाई का विचार लेकर जितने प्रयास आज तक हुए है, ये सब अंत में राष्ट्रवाद के समुख हतभ्रत दिखाई देते है, सच तो यह की मानवता के कल्याण में जो कुछ कार्य हो सका है, वह भी राष्ट्र के आधार पर ही हुआ है। (दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय खंड–15 पृष्ठ–49)

दीनदयाल जी कहते है की श्रीराम ने समाज हित के लिए सब प्रकार के निजी सुखों को तिलांजली दे दी। गद्दी पर बैठे तो भी उसी आधार पर कार्य किया। इसी कारण हम रामराज्य को आज भी याद करते है, राम को अपने भगवान् का अवतार भी माना है, इसका कारण यही है कि राम ने अपना व्यक्तिव समाज में विसर्जित कर दिया था, जब हम अपने को समाज में विसर्जित कर देते है, तब समाज के गुण धर्म हमारे जीवन में घुल जाते है, समाज का शिष्टाचार जब हमारे जीवन में प्रविष्ट हो जाता है, समाज की ज्ञान परम्परा, धरोहर, थाती सबकुछ जब हम अपने में अंतर्भूत कर लेते है और जब हमारे जीवन में समाज के विकास की, उसे समुनन्त करने की भावना आ जाती है, तभी हमारे व्यक्तित्व का विकास हुआ है, ऐसा समझना चाहिए. इसके अतिरिक्त विकास का और कोई अर्थ नही विकास का अर्थ है समाज जीवन के साथ एकात्म हो जाना। (दीनदयाल उपध्याय सम्पूर्ण वांग्मय खंड–15 पृष्ठ–118)

समाज के वंचित वर्ग को स्वावलंबी बनाने के लिए दीनदयाल उपाध्याय कितने सजग और गंभीर रहते थे इस संबंध में प्रख्यात स्वदेशी चिंतक, विचारक और भारतीय मजदूर संघ सहित करीब आधा दर्जन राष्ट्रीय संगठनों के संस्थापक श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी एक घटना सुनाया करते थे। एक बार दीनदयाल जी रेल से यात्रा कर रहे थे। अपने स्वभाव के अनुसार वे द्वितीय श्रेणी के डिब्बे में ही यात्रा करते थे। जिस कोच में वे यात्रा कर रहे थे, उसमें एक बालक बूट पॉलिश की आवाज लगाते हुए आया। दीनदयाल जी के पास बैठे हुए एक सूट–बूट वाले बाबूजी ने जूतों पर पॉलिश कराने की इच्छा तो व्यक्त की, परन्तु बालक से पूछा कि क्या उसके पास पॉलिश के बाद जूता साफ करने के लिए कपड़ा है? बालक ने कहा, नहीं। यह सुनते ही उसने बूट पॉलिश कराने से इनकार कर दिया। उसी समय बिना एक पल गवांए दीनदयाल जी ने उस बालक को अपने पास बुलाया और अपने तौलिए का आधा हिस्सा फाड़कर देते हुए कहा ''जाओ! अब पालिश कर दो''। और बालक ने उस व्यक्ति के जूतों पर पॉलिश कर दी। पॉलिश करने के बाद उस बालक ने कृतज्ञ भाव से दीनदयाल जी की ओर देखा और उस व्यक्ति से पैसे लेकर जाने लगा तो दीनदयाल जी ने उसे अपने पास बुलाया और कहा, बेटा, 'पॉलिश के लिए हमेशा कपड़ा अपने साथ रखा करो, अन्यथा आज तुम्हारा नुकसान हो गया होता''।

इस घटना से पता चलता है कि समाज के अभावग्रस्त वर्ग के उत्थान हेतु दीनदयाल जी कितने तत्पर रहते थे। उनका मानना था कि भारत का संतुलित विकास तब तक संभव नहीं है, जब तक समाज का प्रत्येक वर्ग समान रूप से विकास न करे। वे चाहते थे कि कम से कम स्वतंत्रता के पश्चात् प्रत्येक सरकारी योजना का केन्द्र बिन्दु समाज का वह अंतिम व्यक्ति रहना चाहिए, जो विकास की किरण से अभी तक वंचित है। दीनदयाल जी अश्रुपूरित आंखों से आंसू पोंछने और मुरझाए चेहरों पर मुस्कराहट लौटाने को 'अंत्योदय' की पहली सीढ़ी मानते थे।

दीनदयाल जी मानते थे कि समष्टि जीवन का कोई भी अंगोपांग, समुदाय या व्यक्ति पीड़ित रहता है तो वह समग्र यानि विराट पुरुष को विकलांग करता है। इसलिए सांगोपांग समाज–जीवन की आवश्यक शर्त है अंत्योदय। मनुष्य की एकात्मता तब आहत हो दीनदयाल जी आर्थिक उन्नत्ति के बारे में बात करते हुए कहते है कि

यह सुनिश्चित करना भी आवश्यक है कि विकास योजनाओं द्वारा उत्पन्न धन किसी विशेष वर्ग के हाथों में न पहुँच जाये, अपितु वंचित वर्ग तक भी हमेशा पहुँचता रहे, यह तभी संभव है, जब आर्थिक विकास के साथ नैतिक व चारित्रिक विकास भी होता रहे, तभी समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचने का हमारा स्वप्न साकार होगा। (दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय खंड–१२)

समाज के योजकों को अंत्योदयी होना चाहिए। जब हम सर्वोदय की बात करते है तो सबसे पहले गाँधी और विनोवा भावे का नाम आता है जब हम अभुदय की बात करते है तब हम लोहिया जी को याद करते है, जब हम अन्तोदय की बात करते है तो दीनदयाल उपाध्याय जी का नाम आत्ता है।

निष्कर्ष

गत बीस–पच्चीस वर्षों की बात करें तो समाज में अनेक व्यक्तियों एवं संस्थाओं ने अपने–अपने स्तर पर अंत्योदय के लिए ठोस प्रयास किये हैं। कुछ स्थानों पर मानसिकता में जो बदलाव दिखायी दिया वह आंखें खोल देने वाला है। महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के ढगेवाडी गांव में कुछ साल पहले गांव के वनवासियों ने यह कहकर अपने गरीबी रेखा वाले राशनकार्ड प्रशासन को लौटा दिये कि अब उनके जीवनस्तर में संतोषजनक सुधार आ गया है इसलिए अब उन्हें उनकी जरूरत नहीं है। जब देश के अनेक हिस्सों में झूठ बोलकर बीपीएल राशन कार्ड बनवाने की होड़ लगी हो उस समय मानसिकता में आया यह बदलाव बहुत कुछ कहता है। इसी प्रकार सरकारी एजेंसियों की प्रतीक्षा करने की बजाए महाराष्ट्र के धुले जिले के जनजाति गांव बारीपाड़ा में ग्रामवासियों ने अपने संसाधनों एवं श्रम से परिवर्तन का ऐसा प्रयोग किया है, जिसे देखने के लिए आज दूसरे ग्रामवासी ही नहीं, बल्कि सरकारी अधिकारी और दुनियाभर से विशेषज्ञ भी आते हैं। इन समाज–शिल्पियों ने अपने प्रयासों से सिद्ध कर दिखाया है कि सरकारी संस्थाओं की प्रतीक्षा करने की बजाए यदि समाज स्वयं अपने स्तर पर पहल करता है तो गंदगी, गरीबी, अशिक्षा, कुपोषण, छुआछूत जैसी समस्याएं लंबे समय तक हमारा मार्ग नहीं रोक सकती (कुमार, 2019)। महाराष्ट्र के रायगड जिले के पेन तालुका की 500 गृहणियों ने अपने आसपास की 3000 जनजाति बालिकाओं और करीब एक लाख अन्य लोगों के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन कर दिया। सोलापुर की चन्द्रिका चैहान ने अपने शहर की 15,000 महिलाओं को स्वाभिमानपूर्वक जीवन जीने लायक बनाया, जिनमें 400 प्रथम पीढ़ी की उद्यमी बन गयी हैं। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बागपत जिले में स्थित जौहड़ी गांव में डॉ. राजपाल सिंह ने बिना संसाधनों के 42 अन्तर्राष्ट्रीय, 300 राष्ट्रीय और 3000 से अधिक राज्य स्तर के निशानेबाज तैयार कर पूरी दुनिया में एक मिसाल कायम कर दी। दिल्ली के राम मनोहर लोहिया अस्पताल में नर्सिंग होम विभाग के प्रमुख डॉ. राजेन्द्र सिंह टोंक पिछले 12 वर्षों में दिल्ली और आसपास के क्षेत्रों में साप्ताहिक स्वास्थ्य शिविरों के माध्यम से छह लाख से अधिक मरीजों का निःशुल्क उपचार कर चुके हैं। (कुमार, 2019) प्रसिद्धिपरांगमुख भाव एवं बिना किसी सरकारी सहयोग के वे दूरदराज के क्षेत्रों में आज भी अपना काम कर रहे हैं, परन्तु राष्ट्रीय स्तर पर न तो देशवासी इन्हें जानते हैं और न ही इनके माध्यम से असंख्य लोगों के जीवन में आए सार्थक बदलाव को। संसाधनों के अभाव में भी ये लोग अपने–अपने स्थान पर डटे हुए हैं। यदि उनके काम से प्रेरित होकर कुछ लोग भी अपने–अपने स्थान पर परिवर्तन के कुछ ठोस प्रयास प्रारंभ करते हैं तो कुछ ही समय में देश एक बड़े बदलाव को महसूस करने लगेगा। कुछ प्रयासों का तो अद्भुत असर हुआ है। कुछ स्थानों पर आज सेवित ही अपने आसपास के दूसरे जरूरतमंद लोगों की सेवा कर उन्हें स्वावलंबी बनाने का प्रयास कर रहे हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. उपाध्याय, दीनदयाल.(1958). भारतीय अर्थनीतिः विकास की एक दिशा. लखनऊः राष्ट्रधर्म प्रकाशन लि.
2. उपाध्याय, डी.डी. (2016). दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय. खंड–12, नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन.
3. उपाध्याय, डी.डी. (2017) दीनदयाल उपध्याय सम्पूर्ण वांग्मय खंड–15 पृष्ठ–118) नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन.

4. उपाध्याय, डी.डी. (2016) दीनदयाल उपध्याय सम्पूर्ण वांग्मय खंड–८ पृष्ठ–२२६) नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन.

5. कुमार, प्रमोद. (2019). गांधी के पदचिन्हों परः आधुनिक भारत के गुमनाम समाज शिल्पी. नई दिल्लीः गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति.

6. काम्बले, एस. (2022). संस्थापक, 'जनसेवा घन कचरा व्यवस्थापन सहकारी संस्था मर्यादित' दिनांक 26, 27, 28, 29 नवंबर 2022 को महाराष्ट्र के लातूर संस्था के मुख्यालय में साक्षात्कार.

7. झा, प्रभात.(2018). अंत्योदयः समाज के अंतिम व्यक्ति के उत्थान का संकल्प.नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन.

8. पोखरियाल, एस. (2021). भारत में प्रतिवर्ष 6 करोड़ टन कचरा निकलता है, अपशिष्ट प्रबंधन में नागरिक भागीदारी.https%@@www-jagran-com@news@national&citizens&participation&in&waste& management &jagran&special&22181686-html से पुनः प्राप्त.

9. प्रभुणे, जी. (2022). संस्थापक. भटके विमुक्त विकास परिषद्.दिनांक 22 नवंबर 2022को महाराष्ट्र के पुणे चिंचवड में साक्षात्कार.

10. बंसल, अशोक. (2022). दिल्ली के पूठ खुर्द में स्थित अपना घर आश्रम के कार्यकर्ता. फ़ोन पर साक्षात्कार.

11. भारद्वाज, बी.एम. (2022). संस्थापक, माँ माधुरी बृज वारिस सेवा सदन अपना घर संस्था. दिनांक 25 अप्रैल से 30 अप्रैल, 2022 के बीच विभिन्न चरणों में संस्था के मुख्यालय भरतपुर, राजस्थान में में दीर्घ साक्षात्कार.

12. एमपीजीके. (2021). अशोक का शासन प्रबंधन. https%@@www-mpgkpdf-com@2021@05@ ashok&ka&shasan&prabandhan-html से दिनांक 12 अप्रैल, 2022 को पुनःप्राप्त.

13. शर्मा, महेश. चन्द्र.(2015). आधुनिक भारत के निर्माताः दीनदयाल उपाध्याय. नई दिल्लीः प्रकाशन विभाग,

14. भारत सरकार.

❖◆❖